व्या -१

छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना

डा. सुजाता गुप्ता
हिंदी विभाग
स्नातक डिग्री प्रपत्र ३

Page:
Date: / /

यह कविता सन् 1920 से 1936 ई० तक के कालक्रम में मानी जाती है। यह वह समय था जब देश में गांधी जी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन चलाया जा रहा था और प्रत्येक देशवासी के हृदय में स्वतंत्रता एवं राष्ट्रीयता की भावनाएं विद्यमान थीं। प्रसादजी ने अपने नाटकों — चंद्रगुप्त, स्कन्दगुप्त के माध्यम से राष्ट्रीय जनता में चेतना को जाग्रत करना तथा भारत के अतीत गौरव का गान किया।
प्रसादजी ने 'बीती विभावरी' में किसी नायिका को जगाने का प्रयास ही नहीं किया, अपितु संपूर्ण देश को जाग्रत करने का प्रयत्न किया है। 'चंद्रगुप्त' नाटक में राष्ट्रीयता अपने चरम पर है। कार्नेलिया भारत को अपना देश मानते हुए उसकी प्रशंसा इन शब्दों में करती है :

अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।
सरस तामरस गर्भ विभा पर नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर मंगल कुंकुम सारा।

प्रसाद जी के काव्य संकलन 'लहर में संकलित कविता 'पेशोला की प्रतिध्वनि' राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत है। उदयपुर स्थित पिछोला (पेशोला) झील को देखकर महाराणा प्रताप की वीरभूमि मेवाड़ का स्मरण कवि ने किया है, जो कभी वीरता, तेजस्विता, एवं पराक्रम के लिए विख्यात थी। आज वह वीरता कहाँ चली गई? कवि

Page :
Date : / /

प्रश्न करता है कि राणा प्रताप की गौरव-गाथा का प्रतीक मेवाड़ तो वही है, किंतु वह प्रतिध्वनि कहीं सुनाई नहीं पड़ती, जो राणा प्रताप के समय में सर्वत्र गूंजी थी।

छायावादी कवियों में राष्ट्रीयता की सर्वाधिक प्रखर भावना निराला में दिखाई पड़ती है। 'जागो फिर एक बार' कविता में निराला ने भारत की उन चिर प्रसुप्त शक्तियों को जगाने का प्रयास किया है, जो परतंत्रता की गहरी नींद में सोई पड़ी है। वे कहते हैं, "आज तुम परतंत्र हो, दमित हो, किंतु अतीत में तुम समर-सरताज रहे हो, तुम्हारा यह दीन भाव नश्वर है, इसे त्याग दो":

जागो फिर एक बार।
पशु नहीं वीर तुम समर शूर क्रूर नहीं
काल-चक्र में हो दबे आज तुम राजकुंवर, समर सरताज।
तुम हो महान तुम सदा हो महान
है नश्वर यह दीन भाव
कायरता, कामपरता
ब्रह्म हो तुम
पद रज भर भी है नहीं पूरा यह विश्व भार—
जागो फिर एक बार।

राष्ट्रप्रेम के ओजस्वी भावों से ओतप्रोत होकर कविवर निराला ने भारत माता के उस साकार रूप की वंदना की है जिसके पदतल में लंका शतदल (कमल) की भांति सुशोभित है और जिसके चरणों को सागर

आगे जारी है.....